NT>

Title: Regarding installation of a statue of Shaheed Bhagat Singh in Parliament House Complex.

श्री जे.एस.बराड़ (फरीदकोट) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी इजाजत से एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा उठाना चाहता हूं। देश की आजादी के 55 र्वा बीत जाने के बाद जो शहादत शहीद-ए-आजम भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव की हुई, क्योंकि यह स्थल मेरी कौन्सटीटूऐंसी में है जहां सतलुज दरिया के किनारे उन महान् शहीदों को मिट्टी का तेल डाल कर और काट-काट कर जला दिया गया।

13.00 hrs.

तमाम वहां के देशभक्त लोग मुझे मिले हैं। उन सभी की यह मांग है कि देश की आजादी को 55 बरस बीत जाने के बाद भी शहीदे आजम भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू के बुत हिन्दुस्तान की संसद में नहीं लगे हैं। अगर आप इन तीनों के बुत नहीं लगा सकते, तो कम से कम शहीदे आजम भगत सिंह का बुत तो इस संसद में लगाया जाना चाहिए। मैं आपसे विनती करूंगा कि आप इस महत्वपूर्ण चेयर पर बैठे हैं, 23 मार्च, 1931 को इन लोगों को फांसी लगी थी, आप 23 मार्च, 2003 को इनीशिएटिव लेकर लीड करें और सरकार से कहें कि यह मांग बहुत जोर पकड़ती जा रही है। लोग कह रहे हैं कि इन शहीदों ने क्या गुनाह किया है। आज घर-घर में इनकी आवाज है इसलिए उनका बुत हिन्दुस्तान की संसद में लगना चाहिए। यह मामला दूसरे सदन में कई माननीय सदस्यों ने उठाया था। अन्य पार्टियों के लोगों ने इसका समर्थन किया था।

लाहौर जेल का जो दरवाजा तोड़ा गया था और इनको 23 मार्च की जगह 22 मार्च की रात को ही फांसी लगा दी गई थी। उस रात को जेल कि पिछली दीवार को तोड़कर इन शहीदों के शरीरों को काट-काट कर ट्रक में भरकर सतलुज दरिया के किनारे फिरोजपुर हुसैनीवाला में जला दिया गया था। फिरोजपुर निर्वाचन क्षेत्र के हजारों लोग उनकी सड़ी गली लाशों को उठा लाए और जला दीं। आज भी वह मिट्टी उनके घरों में पड़ी है। वे कह रहे हैं कि हम इसे लेकर देश के राट्रपति महोदय, अध्यक्ष महोदय और प्रधान मंत्री जी के पास जाना चाहते हैं और उनसे विनती करना चाहेंगे कि वे इसको कबूल करें। मैं आपसे पुरजोर शब्दों में विनती करना चाहता हूं कि आप इस मसले को हल करें।

श्री राज बब्बर (आगरा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय साथी के विचारों से पूरी तरह सहमत हूं। मैंने इस सम्बन्ध में 1994 से देश के तीन-तीन प्र धानमंत्रियों को पत्र लिखे हैं। उसमें आग्रह किया है कि शहीदे आजम भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू की मूर्तियों को संसद में लगाया जाए। किसी भी शहीद का नामो निशान, खासकर पंजाब के किसी शहीद का, इस संसद में नहीं है। मुझे अफसोस इस बात का है कि आज यहां पर इस सदन में जो यह कैमरा दिखाई दे रहा है, इसके पीछे कुर्सियों के ब्लाक में एक कुर्सी पर शहीदे आजम भगत सिंह बैठे थे। यह जो ब्राउन पिल्लर आप देख रहे हैं, इसमें जो दरार नजर आ रही है, यह वह धमाका है, जो शहीदे आजम भगत सिंह ने किया था। लेकिन इस संसद के अंदर हमेशा यह कहा गया कि हम यह मामला अध्यक्ष महोदय को दे रहे हैं। तीन-तीन स्पीकर साहबान के पास यह इश्यू गया, लेकिन आज तक उसका निवारण नहीं हुआ। मैं आपसे निवेदन करूंगा, आप जैसी शख्सियत जब इस माननीय कुर्सी पर ि वराजमान है, तो इस इश्यू का निवारण किया जाए। मुझे लगता है कि सदन में कोई भी ऐसा पक्ष नहीं होगा, जो शहीदे आजम भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू की मूर्तियों को यहां लगाने का विरोध करे।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात और कहना चाहता हूं। शहीदे आजम भगत सिंह ने कभी आगरा आकर प्लान बनाया था। आज उसी आगरा नगरी के लोग पानी के लिए तरस रहे हैं। वहां पीने का पानी नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : मैं आपको दूसरा विाय रखने की इजाजत नहीं दूंगा।

श्री राज बब्बर : वहां पर टी.टी.जी.टी. ने एक कार्यक्रम बनाया था, करोड़ों रुपयों की लागत से वहां पानी का इंतजाम करने का, लेकिन आज तक आगरा प्यास से मर रहा है। इतना पैसा खर्च किया जा चुका है, लेकिन वहां काम नहीं हो पा रहा है।

MR. SPEAKER: Shri J.S. Brar and Shri Raj Babbar have raised the issue of installing the statue of Shaheed Bhagat Singh. In the forthcoming meeting of the Committee on Installation of Statues in the Parliament House Complex, I will definitely take up this issue. However, I would request both of you to send a request letter addressed to the Speaker, Lok Sabha.

आज आप सब लोगों ने सहयोग दिया इसलिए 15 विाय पूरे हुए। इतने विाय पहले कभी नहीं लिए गए थे। मैं यही चाहता हूं। अभी मेरे सामने 15 और विाय हैं। लेकिन ये सारे विाय आज नहीं उठाए जा सकते। मैं केवल एक या दो विाय और उठाने की अनुमति दूंगा। कल भी यदि आप सब सहयोग करेंगे, तो मैं आश्वासन देता हूं कि हरेक का विाय आ सकता है। आप सिर्फ एक या दो मिनट में अपनी बात कहें तो सभी सदस्यों के विाय आ सकते हैं।